RNI No.RAJHIN/2012/44901

Postal Reg. No. जयपुर सिटी/446/2021-23

निवेश पत्रिका

निवेश करें लगातार, सपने करें साकार

वर्ष : 12 अंक 3 www.mftoday.com हिन्दी मासिक जयपुर, 1 सितम्बर 2023 कुल पृष्ठ : 8 मूल्य : 10 रुपए email : niveshpatrika@mftoday.com

एक शिक्षक के रूप में निवेश को दिशा देने का काम करता है वित्तीय सलाहकार

एक पेशेवर वित्तीय सलाहकार हमेशा वित्तीय क्षेत्र में होने वाली गतिविधियों, परिवर्तन और बाजार में आये नये विकल्पों पर नजर बनाये रखते हैं

सलाहकार आपको अपने लक्ष्यों तक तेजी से पहुंचने में मदद करने के लिए निवेश विकल्पों की सिफारिश करता है।

एक सलाहकार वित्तीय स्थिति और वित्तीय स्वास्थ्य के कमजोर बिंदुओं को पहचान कर उसे मजबूत करने की आवश्यकता को बताता है

जैसा की हम सबकों पता है की 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है, जैसे एक शिक्षक का विद्यार्थी के निर्माण बहुत बड़ा योगदान होता है उसी प्रकार वित्तीय सलाहकार भी शिक्षक के रूप में अपने कौशल का उपयोग करके निवेश को गति प्रदान करता है। इसलिए निवेश के लिए पेशेवर सलाहकार की मदद हमेशा फायदेमंद होती है। विशेषज्ञों व पेशेवरों की सलाह निवेश संबंधी मामलों में बहुत उपयोगी होती है, जो आपके जीवन में कदम-कदम पर एक शिक्षक के रूप में अपनी विशेषज्ञता से रास्ता दिखाते रहते हैं।

इनकी मदद से आप काम को सफलता से पूरा कर लेते हैं। आज इंटरनेट घर-घर में पहुंच गया है, लोगोंको इंटरनेट से माध्यम से जानकारी हासिल करने में कोई परेशानी नहीं हो रही, बल्कि बहुत जल्द ही वे अपनी रुचि की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। वित्तीय मामलों में भी ऐसा चलन बढ़ता जा रहा है। कई वेबसाइट, मोबाइल ऐप व्यक्ति गत फाइनेंस के क्षेत्र की जानकारी दे रहे हैं।

लोगों को यह रास्ता सुगम व सरल भी नजर आ रहा है। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है। जब आप किसी तरह की मुसीबत में पड़ते हैं, तो वहां आपकी परेशानी को आपकी परिस्थिति के अनुसार समाधान देने के लिए इन वेबसाइट व ऐप से कोई मदद नहीं मिलती। ऐसे में ही वित्तीय सलाहकार की उपयोगिता नजर आती है जो व्यक्ति गत परिस्थितियों को समझते हुए आपके लिए उपयुक्त समाधान उपलब्ध कराते हैं।

- एक सलाहकार एक व्यक्ति विशेष की वित्तीय स्थिति और वित्तीय स्वास्थ्य के कमजोर बिंदुओं को पहचान कर उसे मजबूत करने की आवश्यकता को बताता है।
- सलाहकार की मदद से, आप अनुचित और महत्वाकांक्षी वित्तीय लक्ष्य को अलग-अलग तय कर सकते हैं। सलाहकार तब इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाने में आपकी मदद करता है। उसके सुझावों से आप अपने वित्तीय लक्ष्यों को अल्प, मध्यम और दीर्घकालिक लक्ष्यों में बांट सकते हैं।
- सलाहकार आपको अपने लक्ष्यों तक तेजी से पहुंचने में मदद करने के लिए निवेश विकल्पों की सिफारिश करता है। इसमें सलाहकार आपकी रिस्क प्रोफाइल, व्यक्तित्व और वित्तीय जिम्मेदारियों का आकलन करेगा।
- एक पेशेवर वित्तीय सलाहकार हमेशा वित्तीय क्षेत्र में होने वाली गतिविधियों, परिवर्तन और बाजार में आये नये विकल्पों पर नजर बनाये रखते हैं। और उन सबका अध्ययन करते रहते हैं। इस तरह वे पैसे का निवेश करने और उसे प्रबंधित करने के सर्वोत्तम तरीके के बारे में सोचते हैं।
- अपनी नौकरी से तुलना करके ही आप वित्तीय सलाहकार के काम के महत्व को समझ सकते है। आप अपने वित्तीय प्रबंधन के लिए कुछ ही समय दे पाते हैं जबकि एक सलाहकार पूरा समय इसी में व्यतीत करता है। वित्तीय सलाहकार केवल आपके द्वारा किये जाने वाले धन के प्रबंधन में अधिक समय लगाने में सक्षम होते हैं। इसलिए उनकी सलाह जरूरी है।
- म्यूचुअल फंड और अन्य निवेश विकल्पों पर अप-टू-डेट रहना भी महत्वपूर्ण व जरूरी है। जिसमें आपने निवेश किया है या भविष्य में निवेश कर सकते हैं। इसके लिए वित्तीय सलाहकार बहुत उपयोगी साबित होते हैं क्योंकि उनके पास बहुत सारी अंदरुनी जानकारियां होती हैं, जो आपको सहज उपलब्ध नहीं होती।

वित्तीय सलाहकार के कार्य

वित्तीय सलाहकार अपने ज्ञान और विशेषज्ञता का उपयोग व्यक्तिगत वित्तीय योजनाओं के निर्माण के लिए करते हैं जिसका उद्देश्य ग्राहकों के वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

इन योजनाओं में केवल निवेश ही नहीं बल्कि बचत, बजट, बीमा और कर रणनीति भी शामिल हैं।

सलाहकार अपनी वर्तमान स्थिति और भविष्य के लक्ष्यों का फिर से मूल्यांकन करने और तदनुसार योजना बनाने के लिए नियमित आधार पर अपने ग्राहकों के साथ जांच करते हैं।

जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथी भगवान श्रीकृष्ण थे और उन्होंने उचित सलाह देकर कौरवो से जीत हासिल करवाई थी। उसी प्रकार एक वित्तीय सलाहकार भी हर तरह की अर्थव्यवस्था चाहे वह मंदी की हो या तेजी की, सही समय पर उचित सलाह देकर आपके सच्चे सारथी का फर्ज निभाते हैं। सारांश यह है कि हम अपने क्षेत्र के कितने ही अनुभवी हों लेकिन वित्तीय संसाधनों के सही उपयोग, वेल्थ क्रियेशन के साथ वित्तीय सलाह तथा वित्तीय गोल प्राप्त करने हेतु एक अनुभवी सलाहकार का अनुभवी और विश्वसनीय होना बेहद जरूरी है।

इनसाईड स्टोरी

2

भगवान श्रीकृष्ण से सीखें निवेश के गुर, दमदार होगी रणनीति और मिलेगा ...

3

चेक साइन करते समय न करें ये गलतियां, नहीं तो हो सकता है भारी नुकसान...

4

इन 4 कारणों से आपका पर्सनल लोन का एप्लीकेशन हो सकता...

5

रिस्क कम करने का है बेहतर सॉल्युशन है 'एसेट एलोकेशन'

6

सुख, संपन्नता और ज्ञान के प्रतीक 'भगवान गणेश' से सीखे 'मनी मैनेजमेंट'...

7

किरायें पर रहें या खरीदें अपने सपनों का घर, क्या है फायदे की डील...

8

एक लाख रूपये प्रतिवर्ष 27 वर्षों तक जमा कराने पर ....

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करें: - 98290-40424

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

भगवान श्रीकृष्ण से सीखें निवेश के गुर,

दमदार होगी रणनीति और मिलेगा बंपर रिटर्न

पूरे देश में श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, शास्त्रों में उन्हें 16 कलाओं में पारंगत एकमात्र भगवान का दर्जा दिया गया है। महाभारत युद्ध से पहले कुरुक्षेत्र में उन्होंने अर्जुन को जो उपदेश दिया, वह मैनेजमेंट और नीति की सबसे बड़ी पुस्तक मानी जाती है। श्रीकृष्ण के उपदेशों को सिर्फ राजनीति या धर्म में ही नहीं, बल्कि वित्तीय प्रबंधन में भी इस्तेमाल किया जाए तो ये सफलता का गुरु मंत्र बन सकते हैं। हम उनके उपदेशों से 7 ऐसे ही संदेश निकालकर लाएं हैं, जिन्हें निवेशक इस्तेमाल करें तो उनकी रणनीति दमदार होने के साथ बंपर रिटर्न भी दिला सकती है।

1- लक्ष्य निर्धारित करें

महाभारत युद्ध में जिस तरह से श्रीकृष्ण ने पांडवों को तमाम मुश्किलों और चुनौतियों के बावजूद जीत के लक्ष्य से भटकने नहीं दिया, उसी तरह अगर निवेशक भी अपना लक्ष्य बनाकर और सिर्फ उसे साधने पर निगाह रखेंगे तो उन्हें बाजार में आने वाले उतार-चढ़ावों से निपटने में आसानी होगी। निवेश हमेशा लक्ष्य आधारित होना चाहिए, जिससे आपको अपनी रणनीति को पुख्ता बनाने में मदद मिलती है।

2- हर छोटा निवेश बड़े लक्ष्य की सीढ़ी है

वृंदावन में भगवान कृष्ण का बचपन लोगों के घरों से मक्खन चुराने के लिए प्रसिद्ध था। इसे बचाने के लिए गोपियां मक्खन की मटकी को ऊंचाई पर बांध देतीं थी। बावजूद इसके छोटे से कृष्ण अपने दोस्तों की सीढ़ी बनाकर मटकी तक पहुंच ही जाते थे। एक निवेशक के तौर पर आपका लक्ष्य भले ही कितना ऊंचा हो, हर निवेश को सीढ़ी मानिए और सिप के जरिये छोटे-छोटे कदम बढ़ाकर अपने लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास करते रहिये।

3- लालच कतई मत कीजिए

अगर आप गोल के अनुसार निवेश करते है तो गोल नजदीक आने से पहले ही निकालने की प्लानिंग करे या निवेशक सलाहकार की मदद ले जिससे बिना जोखिम के अपने गोल पूरे कर सके।

4- अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें

कुरुक्षेत्र में अर्जुन अपने प्रियजनों को देखकर भावनाओं में बह गए और युद्ध से इनकार करते हुए हथियार डाल दिए। इसी तरह, आपको भी निवेश करते समय भावना से नहीं बल्कि तथ्यों और तर्कों से काम लेना चाहिए। अपने फाइनेंशियल डिसीजन इमोशन में आकर नहीं बल्कि मानसिक दृढ़ता से लेने चाहिए। अपने पोर्टफोलियो में शामिल निवेश विकल्पों में हिस्सेदारी घटाते या बढ़ाते समय इमोशन पर पूरा कंट्रोल होना चाहिए।

5- जोखिम उठाने से बचें

कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन और कर्ण के पास समान शक्तियां थीं। इतना ही नहीं कर्ण के पास इंद्र का दिया दिव्यास्त्र भी था, जो अर्जुन की जान ले सकता था। लेकिन भगवान कृष्ण ने उन्हें इस जोखिम से बचाया और आखिर में अर्जुन को कर्ण पर विजय भी दिलाई। बतौर निवेशक आपको भी अपने पैसे ऐसी जगहों पर नहीं लगाना चाहिए। जहां अनावश्यक जोखिम हो।

6-अपनी निवेश रणनीति बदलते रहें

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े छोड़कर नए धारण करता है, उसी तरह आत्मा भी पुराना शरीर छोड़कर नया धारण कर लेती है। एक निवेशक के तौर पर हमें इससे यह सीखना चाहिए कि बाजार में आने वाले उतार-चढ़ाव को देखते हुए हमें भी अपनी निवेश रणनीति में बदलाव करना चाहिए और अपने पोर्टफोलियो में नए विकल्प शामिल करते रहना चाहिए। निवेश का मूलमंत्र बदलाव और लचीलापन भी है।

7- बुद्धिमान व अनुभवी मार्गदर्शक का होना जरूरी

सौ कौरवों और उनकी विशाल सेना के खिलाफ पांच पांडव और उनकी छोटी सेना ने तभी जीत हासिल की, जब उनके पास ज्ञान से परिपूर्ण भगवान श्रीकृष्ण का साथ था। वे चतुर और बुद्धिमान थे और कुरुक्षेत्र के युद्ध में उन्होंने ही पांडवों का मार्गदर्शन किया। इसी तरह एक निवेशक को भी फाइनेंशियल बाजार में कदम रखने से पहले कुशल बुद्धिमान व अनुभवी मार्गदर्शक का सहयोग जरूर लेना चाहिए जो निवेश की जटिलताओं और उसके लाभ-हानि के बार में जानकारी रखता हो।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

चेक साइन करते समय न करें ये गलतियां, नहीं तो हो सकता है भारी नुकसान

क्या आप अक्सर चेक का इस्तेमाल करते हैं? क्या आप भविष्य में चेक का इस्तेमाल करना चाहते हैं? अगर हां तो आपके पास इसमें शामिल कानूनी और वित्तीय आस्पेक्ट्स की जानकारी जरूर होनी चाहिए। चेक एक पावरफुल फाइनेंशियल इंस्ट्रूमेंट्स है जिसके जरिये पैसों के आदान-प्रदान में सहूलियत होती है। किसी भी चेक पर साइन करने से पहले आपको पता होना चाहिए कि आप जिसे चेक दे रहे हैं वो कौन है और उसका उद्देश्य क्या है? साइन किये हुए चेक का दुरुपयोग कभी किया जा सकता है या इसे अनपेक्षित लेनदेन के लिए भरा जा सकता है, जिससे आपको भारी वित्तीय नुकसान हो सकता है। हालांकि कई ऐसी छोटी-छोटी चीजें हैं जिनका ध्यान रख आप फिजूल के पेरशानियों से बच सकते हैं।

खाते में प्रयाप्त पैसे रखें

यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि चेक की राशि को कवर करने के लिए आपके खाते में पर्याप्त पैसे है। भारत में चेक जारी करने से पहले पर्याप्त धनराशि बनाए रखना वित्तीय विश्वसनीयता बनाए रखने और कानूनी परिणामों से बचने के लिए जरूरी है। जब कोई व्यक्ति अपने बैंक खाते में पर्याप्त धनराशि के बिना चेक जारी करता है, तो इसका परिणाम चेक बाउंस के रूप हो जाता है। ऐसी स्थिति से कानूनी नतीजे भुगतने पड़ सकते हैं।

तारीख सही लिखें

सुनिश्चित करें कि चेक पर तारीख सही है और उस दिन से मेल खाती है जिस दिन आप इसे जारी कर रहे हैं। यह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह कई कंफ्यूजन से आपको बचाता है और यह सुनिश्चित करता है कि चेक कब भुनाने के लिए वैध होगा। गलत तारीख डालने से चेक को बैंक द्वारा रिजेक्ट भी किया जा सकता है। इसके अलावा सटीक वित्तीय रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

चेक पर नाम

जिस व्यक्ति या व्यवसाय को आप चेक जारी कर रहे हैं उसका नाम साफ़-साफ़ लिखें। सही ढंग से लिखा गया नाम यह सुनिश्चित करता है कि चेक सही जगह पहुंचेगा। नाम लिखने में गलतियों के कारण चेक क्लियर होने में देरी हो सकती है या बैंक द्वारा इसे अस्वीकार भी किया जा सकता है।

परमानेंट इंक का प्रयोग करें

चेक के साथ छेड़छाड़ से बचने के लिए परमानेंट इंक का प्रयोग करें, ताकि इसमें काट-छाट कर बाद में बदला न जा सके। इससे आप धोखाधड़ी से भी बच सकते हैं।

चेक पर साइन करें

अपने पूरे नाम का उपयोग करके चेक पर बताए गए जगह पर साइन करें। यह सुनिश्चित करें कि आपका हस्ताक्षर वही हस्ताक्षर से मेल खाता हो जो आपने बैंक में दिया है, बेमेल होने की स्थिति में बैंक आपके चेक को अस्वीकार कर सकता है और इससे आपका समय बर्बाद हो सकता है और भुगतान में देरी हो सकती है।

चेक नंबर रखें

चेक नंबर का ध्यान रखें और इसे अपने रिकॉर्ड में नोट कर लें। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि आप इसे किसी सुरक्षित स्थान पर लिख लें। जब भी कोई विवाद हो, तो आप संदेह दूर करने के लिए या सत्यापन के लिए बैंक को देने के लिए हमेशा इस चेक नंबर का उपयोग कर सकते हैं।

पोस्ट-डेटिंग से बचें

चेक को पोस्ट-डेटिंग करने से बचें क्योंकि हो सकता है कि बैंक इसे स्वीकार न करे। बैंक को चेक का भुगतान करने में तारीख महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आप वह तारीख डाल सकते हैं जब आप चाहते हैं कि आपके खाते से धनराशि कट जाए। अगर आपने गलत तारीख, महीना या साल डाला है, तो आपका चेक वापस आने की सबसे अधिक संभावना है।

कभी भी खाली चेक जारी न करें

कभी भी खाली चेक जारी न करें क्योंकि इसमें कोई भी राशि भरी जा सकती है। ऐसा करना बेहद जोखिम भरा हो सकता है।

बचाव और सुरक्षा

चेकबुक को खोने या चोरी होने से बचाने के लिए उसे सुरक्षित स्थान पर रखें। आपके हस्ताक्षर के बिना आपके चेक का कोई महत्व नहीं है।

बढ़ती महंगाई से आप भी हैं परेशान तो इन 6 बातों का रखें ध्यान

खर्चों को कंट्रोल करें

मुश्किल समय से निपटने के लिए सबसे जरूरी है कि आप अपने खर्चों को कंट्रोल करें और फालतू खर्च पर रोक लगाएं। अगर पिछले 1-2 महीनों के खर्च को देखेंगे कि आपने कहां ज्यादा या फिजूल खर्च किया है तो आप आसानी से खर्च को कंट्रोल कर सकेंगे। इस दौर में अपने घर का काम खुद करने की आदत डालनी चाहिए। जिन कामों का अभी तक आप मोल चुकाते थे, उन्हें अगर खुद कर सकते हैं तो करें और पैसे बचाएं। क्योंकि हर बचत आपकी कमाई ही है।

इंश्योरेंस

एक्सपर्ट कहते हैं कि युवाओं को सबसे पहले इंश्योरेंस पर फोकस करना चाहिए। हेल्थ इंश्योरेंस, लाइफ इंश्योरेंस और टर्म प्लान, तीनों ही बीमा योजनाओं में निवेश करना चाहिए। इंश्योरेंस की जल्द शुरूआत करने का फायदा यह होता है कि इसमें कम प्रीमियम पर अच्छा कवरेज मिल जाता है।

बजट तैयार करके उसका पालन करें

किसी भी तरह की वित्तीय समस्या से निपटने के लिए वित्तीय अनुशासन बहुत जरूरी है। वित्तीय अनुशासन के लिए आपको अपने मासिक खर्चों के लिए एक बजट तैयार करना चाहिए और महीने के अंत में वास्तविक खर्चों के साथ बजट की तुलना करनी चाहिए। यह तुलना आपको एहसास कराएगी कि आपने उस महीने में क्या फिजूल खर्च किया है। इससे आप अपने फिजूल खर्चों को कंट्रोल कर सकेंगे।

कमाई बढ़ाने की कोशिश करते रहें

भविष्य में खर्चों को पूरा करने के लिए अपनी हॉबी को कमाई का जरिया बनाएं। अगर वित्तीय ज्ञान है तो सलाहकार बने या कोई कला है तो उसका उपयोग भी कर सकते हैं। इससे अपना शौक भी पूरा होगा और कमाई भी हो जाएगी।

म्यूचुअल फंड

पहली सैलरी का एक हिस्सा म्यूचुअल फंड के लिए तय कर दें। एसआईपी यानी सिस्टैमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) से निवेश की शुरूआत कर सकते हैं। एसआईपी की जल्दी शुरूआत करने से जब तक आप जीवन की एक स्टेज पर पहुंचेंगे तो आपके पास अच्छा-खासा फंड इकट्ठा हो जाएगा। कमाई बढ़ने के साथ एसआईपी में निवेश भी बढ़ा दें।

50-20-30 नियम का पालन करें

यह नियम उतना ही स्पष्ट है, जितना इसके नंबर। आपको अपनी कमाई को तीन हिस्सों में बांटना होगा। 50% सैलरी को घरेलू खर्चों के लिए रखना होगा। 20% को थोड़े-थोड़े समय पर पड़ने वाली जरूरतों के लिए रखना होगा और 30% का निवेश भविष्य में पड़ने वाली जरूरतों के लिए रखना होगा।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

इन 4 कारणों से आपका पर्सनल लोन का एप्लीकेशन हो सकता है रिजेक्ट, जानिए कैसे दूर करें ये परेशानी

त्योहारी सीजन शुरू होने वाला है। ऐसे में बहुत सारे लोग त्योहारी खरीदारी करने के लिए पर्सनल लोन लेते हैं। ऐसे में संभव है कि आप भी पर्सनल लोन लेने की योजना बना रहे हों। अगर आप लोन लेने का प्लान कर रहें हैं तो बैंक में एप्लीकेशन देने से पहले कुछ बातों की जानकारी जरूर ले लें। ऐसा नहीं करने पर आपके लोन का एप्लीकेशन रिजेक्ट हो सकता है। हम आपको वो 4 कारण बता रहे हैं, जिसके कारण बैंक लोन का आवेदन सबसे ज्यादा रिजेक्ट करते हैं। इनको ध्यान में रखकर आप आसानी से लोन प्राप्त कर सकते हैं।

1. खराब क्रेडिट स्कोर बड़ी बाधा

जब आप पर्सनल लोन के लिए अप्लाई करते हैं, तो बैंक सबसे पहले आपका क्रेडिट स्कोर चेक करता है। ज्यादातर बैंक 750 से ज्यादा क्रेडिट स्कोर वाले लोगों को लोन देना पसंद करते हैं। अधिक क्रेडिट स्कोर का मतलब है कि व्यक्ति की क्रेडिट हिस्ट्री अच्छी है और उसे लोन देने में जोखिम कम है। वहीं कम क्रेडिट स्कोर वाले लोगों को पर्सनल लोन देना ज्यादा जोखिमभरा माना जाता है।

कई बैंकों/ NBFC ने तो अच्छे क्रेडिट स्कोर वाले लोगों को कम ब्याज दर पर भी लोन ऑफर करना शुरू कर दिया है। इसलिए लोन आवेदन करने से पहले अपना क्रेडिट स्कोर चेक करें, और अगर वो अच्छा नहीं है तो उसे बेहतर बनाने के लिए जरूरी कदम उठाएं।

2. कम समय में कई बार लोन अप्लाई करना

जब लोन पर्सनल लोन के लिए आवेदन कर रहे होते है, तो वो अक्सर ये गलती है कि वो एक ही बार में कई बैंकों/ NBFC में आवेदन कर देते हैं। इसका उनके क्रेडिट स्कोर पर गलत प्रभाव पड़ता है। जब भी आप लोन या क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करते हैं, तो क्रेडिट ब्यूरो से बैंक आपकी क्रेडिट रिपोर्ट मांगते हैं, इसे हार्ड इन्क्वायरी कहा जाता है। जब भी आपके लिए कोई हार्ड- इन्क्वायरी होती है तो आपका क्रेडिट स्कोर कुछ पॉइंट नीचे गिर जाता है। इन हार्ड-इन्क्वायरी की जानकारी आपकी क्रेडिट रिपोर्ट में भी दी जाती है, और कम समय में ज्यादा हार्ड-इन्क्वायरी देखकर बैंक को लग सकता है कि आप किसी भी तरह लोन लेना चाहते हैं, जिसका आपकी क्रेडिट प्रोफाइल पर गलत असर पड़ता है, और इन सब के चलते आपका लोन आवेदक अस्वीकार भी हो सकता है।

3. भुगतान क्षमता का आकलन जरूर करें

बैंक उन लोगों को लोन देना पसंद करते हैं, जो अपनी इनकम का 50% से 55% तक ही कुल लोन ईएमआई (वर्तमान लोन और जिसके लिए आवेदक किया है उसकी ईएमआई मिलकर) में खर्च करते हैं। अगर आप पहले से ही किसी लोन का भुगतान कर रहे हैं, और आप जो लोन लेना चाहते हैं उसकी ईएमआई को मिलकर, कुल ईएमआई भुगतान में अगर आपकी इनकम का 50%-55% से ज्यादा हिस्सा खर्च होगा, तो आपका लोन आवेदन अस्वीकार हो सकता है। अगर आप किसी ऐसी स्थिति में हैं तो या तो अपने वर्तमान लोन का पहले भुगतान करें, या फिर आप जो लोन लेने वाले हैं उसकी भुगतान अवधि लम्बी चुनें ताकि आपकी ईएमआई राशि कम हो जाए। बता दें, लम्बी भुगतान अवधि चुनने से ईएमआई राशि तो कम हो जाएगी लेकिन कुल ब्याज भुगतान बढ़ जाएगा।

4. बार-बार नौकरी बदलने से बचें

आप कहां नौकरी करते हैं, आपकी जॉब प्रोफाइल क्या है और कितने समय से नौकरी कर रहे हैं, बैंक लोन आवेदन का मुल्यांकन करते हुए आवेदक की इन सभी बातों पर ध्यान देते हैं। बैंक ये देखता चाहते हैं कि आपका जॉब रिकॉर्ड कितना स्थिर है। अगर आप बार-बार नौकरी बदलते हैं तो ये अस्थिरता की निशानी है, ऐसे आवेदकों को लोन देने में जोखिम ज्यादा होता है। इसलिए अगर आप पर्सनल लोन लेने की योजना बना रहे हैं तो कम समय के अंतराल पर अपनी नौकरी ना बदलें।

ज्ञान के मोती

1. **बचत-** खर्च करने के पश्चात जो बचे उसे बचत ना करे। बल्कि बचत करने के पश्चात जो बचे उसे ही खर्च करे।
2. **खर्च-** खर्च आवश्यक व दीर्घकालीन उपयोगी वस्तुओं पर ही करें। अन्यथा बिना जरूरत की चीजों पर खर्च करेंगे तो शीघ्र बेचना पड़ सकता है। या कबाड़ी को देना पड़ सकता है।
3. **कमाई-** वर्तमान समय में कभी भी एक अकेली आय पर निर्भर न रहे। वरन् यह

जरूरी है। अपने निवेश को अपनी आय का दूसरा साधन (जरिया) बनावें ।
4. **जोखिम -** जीवन में हर मोड़ पर जोखिम है । अतः थोड़ा जोखिम लेना जरूरी है। क्योंकि जोखिम से रिटर्न की सम्भावना अधिक रहती है।
5. **निवेश** - सभी सेव को एक टोकरी में रखने से उनके खराब होने की सम्भावना अधिक रहती है। अर्थात् निवेश भी डाइवर्सिफाइड (विभिन्न सेक्टरों) में होना चाहिये।

डिस्क्लेमर

निवेश पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बाजारों एवं कॉरपोरेट जगत के घटनाक्रमों की निष्पक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया है। निवेश पत्रिका के नियंत्रण एवं जानकारी से परे परिस्थितियों के कारण वास्तविक घटनाक्रम भिन्न हो सकते है। निवेश पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर पाठकों द्वारा किए जाने वाले निवेश और लिए जाने वाले करोबारी निर्णयों के लिए निवेश पत्रिका कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है। पाठकों से स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

- संपादकः रमेशचन्द मालू

रिस्क कम करने का है बेहतर सॉल्युशन है 'एसेट एलोकेशन'

एसेट एलोकेशन निवेश की रणनीति बनाने में मदद करता है। किस निवेश माध्यम से कितना निवेश करना चाहिए और कितना निवेश सही रहता है, यह हमें एसेट एलोकेशन से पता चलता है।

एसेट एलोकेशन का फायदा

पैसों को अलग-अलग एसेट क्लास में बांटने से नुकसान कम होता है। एक एसेट क्लास में उतार-चढ़ाव होता है तो दूसरा उसे संभालता है। अलग-अलग एसेट क्लास में रिस्क के हिसाब से रिटर्न मिलता है। बाजार की उथल-पुथल में एसेट एलोकेशन काम आता है।

अनिश्चित बाजार और एसेट एलोकेशन

कम से कम एक तिमाही में एसेट एलोकेशन चेक करें। किसी एसेट क्लास में 10 फीसदी से ज्यादा तेजी/मंदी तो रीबैलेंस करें। बाजार की अनिश्चतता में लंबी अवधि का निवेश करें।

निवेश अवधि

निवेश का सही मंत्र है कि सारा निवेश एक जगह न करें। एक एसेट क्लास में ज्यादा निवेश जोखिम भरा होता है। लंबी अवधि में इक्विटी में निवेश बेहतर होता है। 10 साल के इक्विटी निवेश में 10-15 फीसदी अनुमानित रिटर्न मिलता है। ध्यान रखें कि छोटी अवधि के लिए इक्विटी में निवेश जोखिम भरा होता है।

निवेश का लक्ष्य

निवेश करने से पहले अपना टारगेट तय करें। यह तय करें कि आपको निवेश किस काम के लिए करना है। टारगेट के हिसाब से निवेश को 3 भाग में बांट लें। निवेश को छोटी, मध्यम और लंबी अवधि में बांट लें। लक्ष्यों के हिसाब से एसेट एलोकेशन करें। घर, गाड़ी खरीदने या फिर विदेश यात्रा के लिए छोटी अवधि में निवेश करें।

जोखिम क्षमता

निवेश करने से पहले रिस्क लेने की क्षमता का आकलन जरूर कर लें। कम, मध्मय, ज्यादा रिस्क कैटेगरी के हिसाब से एलोकेशन करें। कम उम्र में निवेश कर रहे हैं तो ज्यादा अवधि तो इक्विटी एलोकेशन ज्यादा करें।

निवेशक की उम्र

उम्र के हिसाब से एसेट एलोकेशन रणनीति बनाएं। सीनियर सिटीजन, रिटायरमेंट के करीब हैं तो डेट एलोकेशन ज्यादा करें। रिटायरमेंट का लक्ष्य दूर है तो इक्विटी एलोकेशन ज्यादा करें। लक्ष्य के करीब पहुंचने पर एलोकेशन इक्विटी से डेट में करें।

फाइनेंशियल गोल तय करके निवेश करना है समझदारी भरा फैसला

आपात स्थिति के लिए रह सकते है तैयार

इमरजेंसी फंड बनाना वित्तीय नियोजन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यहां, आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि आपके पास एक ऐसा फंड है जो आपके मासिक वेतन के कम से कम 6 महीने के बराबर है। इस तरह, आपको पारिवारिक आपात स्थिति या नौकरी छूटने की स्थिति में धन की खरीद के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। आपातकालीन कोष आपको विभिन्न खर्चों का समय पर भुगतान करने में मदद कर सकता है।

अनुशासन बनाए रखने में मिलती है सहायता

अगर आप किसी निर्धारित लक्ष्य को लेकर निवेश करते हैं तो से बचत और निवेश में अनुशासन बनाने में मदद मिलती है। इससे आपको अपने खर्च का हिसाब रखने में भी मदद मिलती है। इससे अलावा अगर आपको लगता है कि आप ज्यादा खर्च करते हैं तो आप उसे बचत में बदल सकते हैं। ये आपकी बचत बढ़ाने में मदद करता है।

लक्ष्य हासिल करने में रहती है आसानी

फाइनेंशियल गोल तय करके किये गये निवेश पर एक निश्चित समय पर निश्चित धनराशि मिल जाती है जिससे तय किये लक्ष्यों को आसानी से पूरा किया जा सके। तथा व्यर्थ की परेशानीयों से भी बचा जा सकता है।

समीक्षा करना रहता है सरल

जब सभी निवेश वित्तीय लक्ष्यों से जुड़े होते हैं, तो आप समय-समय पर उनके प्रदर्शन की

समीक्षा कर सकते हैं। ऐसा करने से न केवल आपको अंडर परफॉर्मिंग एवेन्यू की पहचान करने में मदद मिलती है बल्कि यह आपको किसी भी मनचाही स्थिति से निपटने में मदद मिलती है, जो आपको निर्धारित लक्ष्य से दूर ले जा सकता है। इससे अलावा अगर निवेश से रिटर्न में उतार चढ़ाव आता है तो आप अपना पैसा वहां से निकालकर कहीं और निवेश कर सकते हैं।

सही समय पर मिल जाता है पैसा

आप कितने समय के लिए अपना पैसा निवेश करना चाहते हैं या कर सकते हैं, इस बात का विशेष ध्यान रखें। क्योंकि कई सेविंग स्कीम और योजनाएं लॉक इन पीरियड के साथ आती हैं। इसीलिए इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आप जहां निवेश कर रहे हैं उसमें लॉक इन पीरियड तो नहीं हैं और अगर है तो कितना है। इस बात का ध्यान रखने से आपका पैसा आपको आपकी जरूरत के समय पर मिल जाएगा, और आपको लॉक इन पीरियड पूरा न होने पर लगने वाली पेनल्टी भी नहीं देनी होगी।

मन की शांति प्राप्त करने में है सहायक

पर्याप्त धन के साथ, आप अपने मासिक खर्चों को कवर कर सकते हैं, अपने भविष्य के लक्ष्यों के लिए निवेश कर सकते हैं और बिना किसी चिंता के अपने और अपने परिवार के लिए खर्च कर सकते हैं। वित्तीय योजना आपको अपने पैसे को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने और मन की शांति का आनंद लेने में मदद करती है। यदि आप अभी तक इस स्तर पर नहीं पहुंचे हैं तो चिंता न करें।

आपको लोन लेने से बचाता है

अगर आप सही फाइनेंशियल गोल के साथ निवेश कर सकते हैं तो आपको लोन लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि आपके पास पैसों की व्यवस्था रहती है जिससे आप अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इससे आप कर्ज के जाल में नहीं फंसते हैं।

SIP में 10,000 रु प्रतिमाह से लगभग 30 वर्षों मे मात्र 36 लाख के हुये लगभग 15 करोड

100000 Monthly SIP Only	Value as on 29.08.2023		
Scheme Name	Inception Date	Investment SIP 10000 PM	Value (Rs) As On 29.08.2023
Nippon India Growth Fund(G)	08-Oct-1995	3350000	169894186
Franklin India Prima Fund(G)	01-Dec-1993	3570000	150082680
HDFC Flexi Cap Fund(G)	01-Jan-1995	3440000	142621453
HDFC TaxSaver(G)	31-Mar-1996	3290000	141552502
Franklin India Bluechip Fund(G)	01-Dec-1993	3570000	100802626
SBI Long Term Equity Fund-Reg(G)	31-Mar-1993	3630000	98779597
HDFC Capital Builder Value Fund(G)	01-Feb-1994	3550000	75412471
SBI Large & Midcap Fund-Reg(G)	28-Feb-1993	3630000	75352403
Nippon India Vision Fund(G)	08-Oct-1995	3350000	74373278
Tata Large & Mid Cap Fund-Reg(G	25-Feb-1993	3310000	62977085

*निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

सुख, संपन्नता और ज्ञान के प्रतीक 'भगवान गणेश' से सीखे 'मनी मैनेजमेंट' और जीवन बनाएं आसान

देशभर में गणेश चतुर्थी बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। भगवान गणेश सुख, समृद्धि के साथ ज्ञान के भी प्रतीक माने जाते हैं। गणेश जी को विघ्नहर्ता और सुख प्रदान करने वाला भी माना जाता है। भगवान गणेश से निवेश के भी कई मंत्र सीखे जा सकते हैं। भगवान श्रीगणेश के शरीर का हर अंग बहुत ही खास है। विशाल सिर, बड़े-बड़े कान, बड़ी और तेज आंखे, हाथी के समान मुख, ये सब अपने आप कुछ न कुछ बातें सीखाते है। यहां तक कि निवेश, बिजनेस और आर्थिक लक्ष्यों को लेकर भी भगवान गणेश से सीख ले सकते हैं। हमने यहां कुछ ऐसे ही निवेश के मंत्रों की जानकारी दी है इनको अपनाकर आप भी अपने और अपने परिवार के लिए निवेश करके सुख और समृद्धि ला सकते हैं।

बड़ा सोचें

भगवान गणेश का विशालकाय सिर हमें सिखाता है कि जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बड़ा सोचें। निवेश हो या बिजनेस धैर्य के साथ ऐसी प्लानिंग करें जिसमें अल्पकालिक, मध्यकालिक, और दीर्घकालिक लक्ष्य शामिल हों। आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्लानिंग में वर्तमान जरूरतों/खर्चों को पूरा करते हुए भविष्य के लिए फंड सुनिश्चित करने वाले इन्वेस्टमेंट व सेविंग्स प्लान्स को जगह देना जरूरी है। साथ ही सोच-समझकर सही माध्यम या विकल्प का चुनाव करें। प्लानिंग करते वक्त अपनी जोखिम उठाने की क्षमता आकलन भी जरूर करें।

अपने लक्ष्य के लिए फोकस्ड व अडिग रहे

माता पार्वती को दिए वचन को पूरा करने के लिए भगवान गणेश ने अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की। वह अपने लक्ष्य और प्लानिंग को लेकर अडिग रहे। आपको भी अपने आर्थिक लक्ष्यों के लिए योजना बनाने के बाद उस पर अडिग रहते हुए पूरा करने का प्रयास करते रहना चाहिए। ध्यान भटकने या निराश होने से बचने के लिए खर्च और बचत पर अनुशासन बनाए रखने की जरूरत पड़ती है। यह भी ध्यान दें कि आपने जो प्लानिंग की है, वह सही दिशा में आगे बढ़ रही है या नहीं। यदि नहीं तो उसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करने के लिए भी तैयार रहें।

रहें चौकन्ना

भगवान गणेश के लम्बे और बड़े कानों से चौकन्ना रहने की शिक्षा मिलती है। यानी बाजार में क्या हो रहा है, इस बारे में हमेशा अपडेट रहें। साथ ही किसी भी निवेश या बचत विकल्प के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने के बाद ही उसमें पैसा लगाएं।

मुनाफे पर रखें नजर

अपनी जोखिम क्षमता के आधार पर ऐसा डायवर्सिफाई पोर्टफोलियो विकसित करें, जिससे कि अधिक से अधिक अच्छा रिटर्न मिले। मुनाफा भगवान गणेश के अतिप्रिय मोदक की तरह है, जिसे तभी पाया जा सकता है जब विकल्प उचित हो और प्लानिंग सही।

छोटी सवारी यानी लिमिट में रखें इच्छाएं

गणेश भगवान की सवारी मूषक से अपनी इच्छाओं और खर्चों को लिमिट में रखने की सीख ली जा सकती है। फिजूलखर्ची आपके बजट और फ्यूचर प्लानिंग को बिगाड़ सकती है। इसलिए अपनी सीमाएं जानते हुए खर्च करना बेहद जरूरी है।

सोचें सबसे हटके

जब भगवान गणेश और कार्तिकेय में प्रतियोगिता हुई कि कौन संसार के तीन चक्कर पहले पूरे करेगा, तो गणेश ने बुद्धि और तर्क से काम लेते हुए अपने माता-पिता यानी भगवान शिव और माता पार्वती की प्रदक्षिणा कर प्रतियोगिता पूरी की। उन्होंने सबकी सोच से अलग मार्ग निकालकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति की। आप भी इससे सीख लेकर जो सभी कर रहे हैं, उसका अनुसरण न कर आउट ऑफ द बॉक्स सोच के साथ उचित तरीका अपनाकर अपने लक्ष्यों की पूर्ति कर सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपको अपनी कमजोरी और स्ट्रेंथ का ज्ञान होना जरूरी है।

उतार-चढ़ाव के लिए रहें तैयार

निवेश में, खासकर अगर शेयर बाजार में निवेश के दौरान उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है। इसके लिए तैयार रहें। भगवान गणेश के बड़े पेट से सीख लेते हुए हर उतार-चढ़ाव को डाइजेस्ट करने की क्षमता खुद में विकसित करें और गिरावट से पैनिक हुए बिना धैर्य के साथ लॉन्ग टर्म पर नजर रखें।

Mutual fund investment are subject to market risk, read all scheme related document carefully

स्वतत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक रमेश चन्द मालू द्वारा मोहन शर्मा एण्ड कंपनी प्रा.लि.ए-10, सुदर्शनपुरा औधोगिक क्षेत्र जयपुर से मुद्रित एवं 103 प्रथम मंजिल, बृज अनुकम्पा, बीएसएनएल के सामने, अशोक मार्ग, सी-स्कीम जयपुर-302001 से प्रकाशित। सम्पादक : रमेश चन्द मालू मो. 98290-40524, फोन 0141-2360570/71,
ई-मेल : niveshpatrika@mftoday.com वेबसाईट www.mftoday.com

किरायें पर रहें या खरीदें अपने सपनों का घर, क्या है फायदे की डील, इन 6 बातों से समझें

घर खरीदना एक बेहतर आप्शन रहेगा या किराए पर रहना? ये सवाल हर किसी के जहन में जरूर उठता है। किसी कमरे या घर को रेंट करने का सबसे बड़ा फायदा इसकी फ्लेक्सिबिल्टी है, लेकिन ऐसे भी कई कारण है जिससे यह स्पष्ट होता हैं कि घर खरीदना लॉन्ग टर्म में काफी बेहतर साबित हो सकता है। कुछ लोगों का तर्क है कि घर खरीदना बहुत महंगा है जबकि किराए पर लेना आसान है और लंबे समय में बहुत अधिक वित्तीय बोझ के बिना इसे किया जा सकता है। दूसरी ओर, कुछ लोगों का मानना है कि अपना खुद का घर खरीदने से आपका भविष्य और आपका परिवार सुरक्षित रहता है। इसके अलावा आपका घर एक इन्वेस्टमेंट भी है और इसमें अन्य लाभों के अलावा वित्तीय लाभ भी शामिल हैं। आइये जानते हैं घर खरीदना क्यों है फायदे का सौदा।

प्राइस

घर रहने के हिसाब से ही नहीं बल्कि लॉन्ग टर्म में एक शानदार इन्वेस्टमेंट भी है। भारत में रियल एस्टेट प्राइस ने ऐतिहासिक रूप से पॉजिटिव ही रहा है। आप आज जिस कीमत पर घर खरीदते हैं उसका कीमत अगले दिन चढ़ा हुआ ही होगा।

स्टेबल हाउस कॉस्ट

किरायेदारों को अक्सर बाजार में उतार-चढ़ाव के अधीन किराये की बढ़ती कीमतों का सामना करना पड़ता है। दूसरी ओर, घर के मालिक एक बार जो कॉस्ट देता है वो अंतिम ही होता है। यह स्थिरता बेहतर वित्तीय योजना और इन्फ्लेशन के खिलाफ सिक्योरिटी भी देता है।

अपने घर का मालिक होंगे आप

घर का मालिक होने से सुरक्षा और स्थिरता की भावना मिलती है जो किराये पर नहीं मिल सकती। घर के मालिक का अपने रहने की जगह पर नियंत्रण होता है। इसके अलावा सामाजिक नजरिये से देखें तो घर खरीदने से गर्व और उपलब्धि की भावना पैदा होती है। आप जहां रहते हैं उसे अपना कह सकते हैं।

मकान मालिक को कोई चिंता नहीं

घर खरीदने के बाद आपको मकान मालिक के साथ व्यवहार नहीं करना पड़ेगा। इसका मतलब सभी चिंताओं से मुक्ति है, जिसमें घर खाली करने की चिंता भी शामिल है, भले ही आपने कुछ भी गलत नहीं किया हो। इसके अलावा, आप अपने घर का रख-रखाव अपनी इच्छानुसार कर सकेंगे और अगर आप चाहें तो अपने घर की पूरी मरम्मत भी करा सकेंगे। किराये पर रहते हुए यह निश्चित रूप से संभव नहीं है।

टैक्स बेनिफिट और किराये से कमाई

जब आप घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं तो आपको टैक्स लाभ मिलता है। आयकर अधिनियम की धारा 24(बी) और 80सी के तहत क्रमशः होम लोन के ब्याज और मूल भुगतान पर कटौती से टैक्स का बोझ काफी कम हो सकता है और इससे बचत भी बढ़ती है। घर का मालिक होने के नाते आप चाहें तो आप उसे किराए पर भी चढ़ा सकते हैं। अगर आपके पास कई संपत्तियां हैं तो एक हिस्से को किराए पर दे देने आपको गहर बैठे ही एक्स्ट्रा सोर्स ऑफ इनकम भी मिल जाता है।

भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षा

जब आप घर खरीदते हैं तक उसका सुख सिर्फ आपको ही नहीं मिलता है। आपकी आने वाली पीढ़ी भी सुख-शांति से अपना जीवन गुजारते हैं। ये परिवार में एक सुरक्षा का भावना लेकर आता है।

'डेट इंडेक्स फंड' में 5 वर्ष में ले सकते है FD से ज्यादा फायदा

एक निवेशक के रूप में आपके पास डेट म्यूचुअल फंड्स से लेकर बॉन्ड तक अलग अलग तरह के इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करने का विकल्प है। लेकिन, टारगेट मेच्योरिटी डेट फंड आपके लिए किसी तरह के जोखिम से बचने के लिए आइडियल सॉल्यूशन है। यह एक डेट इन्वेस्टमेंट विकल्प है जिसमें बॉन्ड की विशेषताएं हैं। यानी मेच्योरिटी तक निवेश बनाए रखने पर एक तय रिटर्न मिलता है। इसके अलावा इसकी कुछ अतिरिक्त विशेषताएं हैं, जो आपको लिक्विडिटी और एसेसेबिलिटी से संबंधित चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सकती हैं।

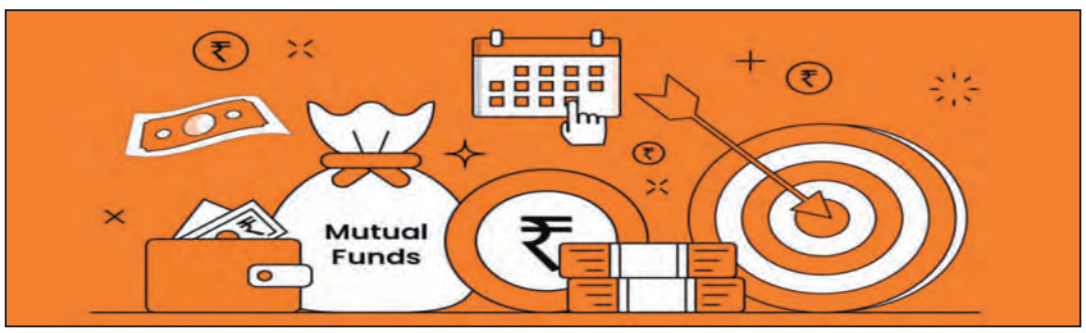

इस फंड के कई फायदे हैं। लेकिन वर्तमान समय में डेट इंडेक्स के लिए कम से कम 35 प्रतिशत इक्विटी का होना आवश्यक है।

टैक्स का लाभ

बॉन्ड निवेश से कूपन आय पर सीमांत दरों पर कर लागू होते है, जिसके मुकाबले में इंडेक्स फंड अधिक टैक्स एफिसिएंट हैं। दूसरी ओर, इंडेक्स फंड्स पर इंडेक्सेशन के लाभ से टैक्स लगाया जाता है जो संभावित रूप से आपके निवेश रिटर्न पर टैक्स लायबिलिटी को कम कर सकता है।

तरलता

आप म्यूचुअल फंड हाउस के जरिए आसानी से इंडेक्स फंड में यूनिट खरीद और बेच सकते हैं, इसलिए आपको एक्सचेंज की संभावित तरलता के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी।

आसान और कम लागत

ईटीएफ के विपरीत, आपको इंडेक्स फंड में यूनिट को खरीदने या बेचने के लिए डीमैट खाते के माध्यम से लेनदेन करने की आवश्यकता नहीं है। आप, किसी अन्य म्यूचुअल फंड योजना के जैसे, किसी भी फंड हाउस के जरिए यूनिट खरीद सकते हैं।

पारदर्शिता

डेट इंडेक्स फंड एक इंडरलाइंग डेट इंडेक्स की नकल करते हैं, इसलिए वे निवेश, जारीकर्ता रेटिंग और परिपक्वता के मामले में बेहतर तरलता और पारदर्शिता प्रदान करते हैं।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

एक लाख रूपये प्रतिवर्ष 27 वर्षों तक जमा कराने पर

पीपीएफ में 27 लाख के बने 99 लाख (Approx)

XYZ फंड में 27 लाख के बने 9.27 करोड़ (Approx)

(XYZ) Fund V/s PPF

Period Ended	Amount Invested ₹	Investment Value in PPF*(₹)	Investment Value in NIFTY 500# (₹)	Investment Value in NIFTY 50## (₹)	INVESTMENT VALUE IN XYZ FUND (₹)
Mar-96	100,000	100,000	100,000	100,000	100,000
Mar-97	100,000	212,000	191,996	198,275	190,400
Mar-98	100,000	337,440	321,815	328,703	361,168
Mar-99	100,000	477,933	448,060	417,269	775,482
Mar-00	100,000	634,289	894,060	694,040	2,187,572
Mar-01	100,000	803,268	614,193	626,030	1,489,519
Mar-02	100,000	979,244	749,299	725,246	1,981,797
Mar-03	100,000	1,166,560	800,089	740,084	1,960,055
Mar-04	100,000	1,359,884	1,815,212	1,478,480	4,319,060
Mar-05	100,000	1,568,675	2,363,187	1,834,210	7,372,099
Mar-06	100,000	1,794,169	4,052,861	3,218,426	14,419,809
Mar-07	100,000	2,037,703	4,558,108	3,779,419	14,812,000
Mar-08	100,000	2,300,719	5,701,288	4,828,801	16,918,693
Mar-09	100,000	2,584,776	3,571,702	3,217,470	10,902,389
Mar-10	100,000	2,891,559	6,887,102	5,739,788	23,202,443
Mar-11	100,000	3,222,883	7,562,400	6,549,417	26,374,006
Mar-12	100,000	3,587,160	7,076,362	6,113,716	25,351,701
Mar-13	100,000	4,002,830	7,629,067	6,746,985	25,717,046
Mar-14	100,000	4,451,076	9,192,202	8,160,864	31,690,662
Mar-15	100,000	4,938,320	12,503,840	10,559,824	45,686,312
Mar-16	100,000	5,467,953	11,784,903	9,833,579	40,721,899
Mar-17	100,000	6,020,982	14,893,307	11,915,619	54,047,414
Mar-18	100,000	6,589,113	16,909,541	13,416,755	57,752,542
Mar-19	100,000	7,203,064	18,654,655	15,723,476	61,136,077
Mar-20	100,000	7,873,907	13,788,388	11,888,787	41,234,563
Mar-21	100,000	8,532,954	24,584,824	20,612,338	67,819,612
Mar-22	100,000	9,238,794	30,164,554	24,888,408	85,584,779
Mar-23	100,000	9,994,748	29,896,082	25,134,975	92,779,984

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।